Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

Notes For— B.A-part-III, Paper-5.

Topic :— ग्यासुद्दीन बलबन (1266-87) :- दिल्ली के आरंभिक सुल्तानों में बलबन सबसे महान था। उसने सुल्तान की शक्ति एवं प्रतिष्ठा को नए धरातल पर स्थापित किया, तुर्की राज्य का विस्तार किया तथा एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की।

बलबन का आरंभिक जीवन :- बलबन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था। वह अपने आपको अफरासियाब (फारस का प्रसिद्ध वंश) वंश से संबद्ध मानता था, परंतु इसकी पुष्टि के लिए कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि- बलबन इलबारी तुर्क जनजाति का था। उसका जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उसके पिता/पितामह इल्बारी तुर्कों के एक बड़े कबीले के मुखिया थे। दुर्भाग्यवश बलबन अपनी युवावस्था में ही मंगोलों द्वारा बंदी बना लिया गया। मंगोलों ने उसे बसरा ले जाकर दास के रूप में ख्वाजा जलालुद्दीन के हाथों बेंच दिया। ख्वाजा ने उसकी शिक्षा की व्यवस्था कर उसे सुसंस्कृत बनाया। बलबन को लेकर ख्वाजा 1223 ई. में दिल्ली आया। बलबन से प्रभावित होकर इल्तुतमिश ने उसे खरीद लिया और अपने दासों के दल में सम्मिलित कर लिया। अपनी प्रतिभा के बल पर बलबन निरंतर प्रगति करता गया।

इल्तुतमिश ने आरंभ में उसे अपने नौकर के रूप में रखा, लेकिन शीघ्र ही उसे "चालीसा" में

→ शामिल कर लिया। इस समय से बलबन का तीव्र गति से उत्थान हुआ। रुकनुद्दीन का विरोध करने एवं रजिया का पक्ष लेने के कारण उसे कुछ समय कारागार में व्यतीत करना पड़ा। रजिया ने सुल्तान बनने के पश्चात् बलबन को अमीर-ए-शिकार के पद पर नियुक्त किया।

रजिया के समय में हुए सत्ता संघर्ष में बलबन ने बहरामशाह का पक्ष लेकर अपने लिए अमीर-ए-आखूर का पद प्राप्त कर लिया। उसे रेवाड़ी और हाँसी की जागीर भी दी गई। सुल्तान अलाउद्दीन मसूदशाह के शासनकाल में बलबन को अमीर-ए-हाजिब का पद सौंपा गया। इसी समय उसने मंगोलों को पराजित कर उच्छ पर अधिकार कर लिया। इससे बलबन की शक्ति और प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ गई। उसने मसूदशाह को अपदस्थ कर सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद को गद्दी पर बैठाया।

—